भिर् अन्तःपुरे सह (schol. क्रीडेत्); MAH. 1.5576.5703. 7713. 3) degere, traducere *tempus*. MAH. 1.7.: क्वचा 'यं विहृतस् त्वया कालः; 3.12535.: यथाप्रतिज्ञं विहृतश्च कालः; IN. 1.58.: वर्षम् एकं विहृत्यै 'वम्. *Etiam omissâ tempus exprimente voce.* MAH. 4.27.: इत्य् एतद् वो मया "ख्यातं विहरिष्याम्य् अहं यथा; MAN. 6.22.: स्थानासनाभ्यां विहरेत् stando et sedendo absumat *tempus* (schol. कञ्चित् कालं स्थित एव स्यात् कञ्चिच्चो 'पविष्ट एव; cf. Westerg.).

c. सम् 1) comprehendere, complecti, colligere, *zusammenfassen*. MAH. 3.189.: कृत्वा द्वादशधा "त्मानम् ... संहृत्यै 'कार्णवं सर्वं त्वं शोषयसि रश्मिभिः (संहृत्य = संहृत्या "त्मानम् i. e. vim tuam comprehendendo, colligendo); MAH. 3.11517.: संहृत्य मुष्टिम्. 2) *A.* contrahere, in se contrahere, *einziehen*. MAH. 3.11277.: संहरस्व महावीर्य स्वयम् आत्मानम् आत्मना; HIT. 19.13.: न हि संहरते ज्योत्स्नाम् चन्द्रश् चाण्डालवेश्मनि. *C. ablat.* abstrahere. BH. 2.58.: यदा संहरतेचा 'यम् कूर्मो ऽङ्गानी 'व सर्वशः। इन्द्रियाणी 'न्द्रियार्थेभ्यः. 3) *P. A.* retrahere. RAGH. 4.16.: वार्षिकं सञ्जहारे 'न्द्रो धनुः; MAH. 3.772.: संहरस्व पुनर् बाणम्; SAK. 6.1.: एष संहृतः (बाणः). 4) cohibere, supprimere. N. 6.14.: संहर्तुन् नो 'त्सहे कोपम्; RAGH. 10.33.: संह्रियते वचः. 5) destruere, delere, extinguere. MAH. 1.241.: कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः; 3.1644. *Vid.* संहर्तृ, संहार. 6) *i. q. simpl.* sgf. 1. MAN. 8.189.9.113.123.

c. सम् praef. उप 1) afferre. MAH. 1.7206. (cf. 7208. उपजहार). 2) abstrahere, retrahere. HIT. 19.6.: केतुः पार्श्वगताम् छायां नो 'पसंहरते द्रुमः.

c. सम् praef. प्रति 1) retrahere. DR. 5.4.: यस् त्वा 'च पातालमुखे पतन्तम् पाणौ गृहीत्वा प्रतिसंहरेत; SAK. 5.20.: प्रतिसंहर शायकम्; R. Schl. II. 22.10. — *Caus.* retrahendum curare. R. Schl. II. 22.26.

2. हृ 3. *P.* (प्रसह्यकरणे *K.* प्रसह्यकृत्याम् *V.*) violenter facere.

हृच्छय *m.* (qui in corde jacet *vel* dormit e हृद् cor et शय) amor *et* deus amoris. IN. 5.44. N. 1.17.

हृद् *n.* cor. N. 1.18. (हृद् correptum e हृद्, v. gr. comp. 1.; lat. *CORD, cor*; gr. κέαρ, κέατ-ος pro κέαρδ-ος, goth. *hairtô*, Them. *hairtan*, v. gr. comp. 141.; nostrum *Herz*. De gr. καρδία, lith. *szirdis*, slav. *srjdjze*, hib. *cridhe*, v. sq. हृदय.

हृदय *n.* 1) cor. BR. 1.5. N. 9.4.26. 2) notitia, scientia. N. 14.21.20.29. (Vid. हृद् et cf. slav. *srjdjze* neut., Them. *srjdjzjo* (v. gr. comp. 258. 259.), gr. καρδία nititur fem. formâ हृदया; ita lith. fem. *szirdis*, gen. *szirdiĕ-s*, vel *szirdĕ-s*. Etiam hib. *croidhe* vel *cridhe* masc. cor potius ad हृदय, e हर्दय, quam ad हृद् referendum esse censeo. Respiciatur Derivat. *croidhea-mhuil* «hearty, generous».)

हृद्य (a हृद् s. य) amoenus, jucundus, gratus, suavis, amatus. BH. 17.8.

1. हृष् 4. *P. A.* हृष्यामि, हृष्ये; praet. mltf. अहृषम्. 1) se erigere, horrere; *praesertim de corporis pilis* (vid. लोमहर्षण) *et floribus*. MAH. 2.1757.: अनिशं शब्दम् अश्रौषन् ततो रोमाणि मे ऽहृषन्. *Part. pass.* हृषित et हृष्ट erectus. BH. 11.14.: विस्मयाविष्टो हृष्टरोमाः N. 5.25.: हृषितस्रज्; 23.17.: पुष्पाणि ... हृषितानि; MAH. 4.1245.: हृषितानि रोमाणि. — हृषित i. q. हृष्टरोमन् i. e. erectos pilos habens, *prae terrore*, perterritus. BH. 11.45.: अदृष्टपूर्वं हृषितो ऽस्मि दृष्ट्वा भयेनच प्रव्यथितम् मनो मे (cf. 11.14.). 2) gaudere. N. 25.8.: जहृषेच नराधिपः; R. Schl. II. 63.15.: ददृशिरे घनाः। ततो जहृषिरे सर्वे भेकसारङ्गबर्हिणः; MAH. 2.2184.: जहर्ष; MAN. 2.54.: हृष्येत्. — हृष्ट gaudens, laetus. N. 1.24. IN. 4.5. — *C. gen.* H. 2.7.: हृष्टो मानुषमांसस्य. — 1) exhilarare. MAH. 1.4460.8280. 2) gaudere. MAN. 6.57.: अलाभे न विषादी स्याल् लाभेचै 'व न हर्षयेत्. (हृष् e हर्ष्, lat. *horreo* per assim. e *horseo* = Caus. हर्षयामि, v. gr. comp. 109[a]). 6.; *hilaris*, mutato *r* in *l*, abjectâ sibilante, sicut in gr. χαίρω, χαρῶ, χάρμα cet.; hib. *gairim* «I laugh, rejoice, extol», nisi pertinet ad गृ i. e. गर्, vel ad हस् ridere, mutato *s* in *r*;